HIN2B09c

जगदम्बा प्रसाद दीक्षित *दिल और पेट*

1. जो कहानी मैं तुम्हें सुना रहा हूँ, उसकी शुरुआत दिल से हो रही है लेकिन इस की ट्रेजेडी यह है कि यह दिल से शुरू होकर पेट पर ख़त्म हो जाती है।

2. गनपत को तुम नहीं जानते। कई बार तुमने उसे देखा है, पर तुम्हारे लिए उसमें कोई दिलचस्पी नहीं। वह भी तुम्हारी तरह अपना बीसवां पार कर रहा है। वह रिक्शा चलाता है और तुम उस पर बैठते हो। तुम्हारी जवानी जब रिक्शे पर बैठकर अपने कालेज की रंगीनियों की मधुर कल्पनाओं में खो जाती है, तब उसकी जवानी उसकी पतली टाँगों में बस कर पैडिल पर ज़ोर-ज़ोर से उछलती है, ताकि तुम ठीक वक़्त पर कालेज पहुँच सको।

3. खैर ! जब तुम्हारी रगों में जवानी का ख़ून दौड़ा तो उसकी नसों में भी कुछ गरमाहट हुई। फ़र्क इतना ही था कि तुम्हारे पास सिर्फ़ दिल ही दिल था, उसके पास पेट भी था। तुम्हारे पास भरा पूरा घर, महकता हुआ बाग़ और चहकता हुआ कालेज था। उसके पास ? हंसने रोने वाला दुख दर्द और आंसुओं में हमदर्दी की दुम हिलाने वाला था एक कुत्ता मोती। तुम्हारा सूनापन डोरा या फ़्लोरा के बीच खो जाता है, पर गनपत को जैसे वह खा जाना चाहता है। इस इतनी बड़ी दुनिया में सिर्फ़ मोती उसका ऐसा साथी है जो उसके इन्तज़ार में जागता रहता है। दिन भर की ठोकरों और उपेक्षाओं के मारे ये दोनों प्राणी जब तक रात में एक दूसरे के प्रति हमदर्दी व प्यार का मूक आदान-प्रदान नहीं कर लेते, उन्हें नींद नहीं आती।

4. एक दिन रात को जब तुम लीना के साथ आख़िरी शो देखकर लौटे तो गनपत ने तुम्हें अपने रिक्शे पर बिठा लिया। उसने नज़रें चुरा कर लीना को भी देखा और वह उसे बड़ी अच्छी लगी। तब गनपत बार-बार रिक्शे की पैडिलों पर उछल रहा था, तब तुम लीना के साथ रूमानी हरकतें कर रहे थे। गनपत समझ रहा था।

5. उसकी फूली नसों में ख़ून की रफ़्तार तेज़ हो गई। हैंडिल पर जमी काली कलाइयों में कम्पन होने लगा। उसने महसूस किया कि तुम्हारा हाथ लीना की कमर पर है और लीना का सिर तुम्हारे सीने पर। उसकी सांस ज़ोरों से चलने लगी।

6. *जब तुमने लीना को चूमा गनपत मोड़ की दूसरी तरफ़ से आती हुई मोटर का न होर्न सुन सका और न ही उसका उजाला देख सका। मोटर की तेज़ रोशनी में चौंधियाने के बाद जब उसकी आँखें खुलीं तो मोटर, रिक्शे को ठोकर मार चुकी थी।

7. लीना को चोट आई। तुम्हें भी कुछ आई। लीना को चोट लगने से तुमने गनपत को कुछ पीटा। तुम्हारे ठीक बाद उस मोटर वाले ने भी गनपत को मारा।*

8. उस रात को कोई डेढ़ दो बजे अपने चकनाचूर रिक्शे को रखकर जब गनपत अपनी अंधेरी कोठरी में पहुँचा तो उसकी कमीज़ पर खून था, बालों पर खून था और गालों पर भी खून बह रहा था।

9. दरवाज़े पर उसका कुत्ता अपने मालिक की बिगड़ी हुई हालत को देखकर शायद ताज्जुब और हमदर्दी से दुम हिला रहा था। उस रात गनपत अपने मोती को भींच बड़ी देर तक सिसकता रहा। मैं नहीं कह सकता कि वह चोटों के दर्द से रो रहा था या उसे और कोई पीड़ा थी।

10. अगले दो दिनों तक गनपत अपनी कोठरी से बाहर नहीं निकला। उस रात का जब वह सोया तो उसका अंग-अंग जैसे टूट रहा था जब उसकी आँखें खुलीं तो उसे बहुत तेज़ बुखार था। उसकी आँखें जल रही थीं और सारा बदन तप रहा था।

11. इस तरह सारा दिन बीत गया। मोती को ताज्जुब हो रहा था कि उसका मालिक अब तक कैसे सोया है। शाम को गनपत की तबियत जब कुछ हलकी हुई तो न जाने क्यों उसकी आँखें भर आईं। वह बड़ी देर तक अपने जलते हाथों से मोती को थपथपाता और पुचकारता रहा। फिर चादर ओढ़कर करवट बदल कर सो गया। दूसरे दिन बुखार और तेज़ रहा, लेकिन शाम को फिर काफ़ी उतर गया। तुम उस वक़्त डोरा

के साथ शहर के सबसे शोनदार होटल में 'डिनर' के बाद लौट रहे थे, जब दो दिनों के भूखे गनपत के लिए और ज़्यादा भूखा रहना मुश्किल हो गया था।

12. जब पेट में कुलबुलाती हुई आँतड़ियों ने लेटे रहना मुश्किल कर दिया तो वह अपने कांपते कदमों पर किसी तरह खड़ा हुआ। जब वह दरवाज़े को पार कर रहा था तो उसका मोती भी उसके साथ था। उसके दुख दर्द का साथी मोती उसकी भूख का भी साथी था और उसे भी पिछले दो दिनों से शायद कुछ नहीं मिला था।

13. चौराहे के उस पार वाले होटल का बैरा गनपत को जानता है। गनपत ने जब उससे अपनी भूख का हाल कहा तो वह दो रोटियाँ और थोड़ी तरकारी लाने को तैयार हो गया।

14. दो दिन के भूखे गनपत के लिए रोटियाँ क्या चीज़ थीं, मैं नहीं कह सकता। इतना ज़रूर कह सकता हूँ कि रोटियों को तुमने कभी उस नज़र से नहीं देखा, जिस नज़र से उस दिन गनपत देख रहा था।

15. जब बैरा निकला तो उसके हाथों में दो सफ़ेद सुन्दर रोटियाँ थीं जिन पर खुशबूदार गोश्त की बोटियाँ रखी थीं। गनपत ने जब उन्हें लिया तो उसके कमज़ोर हाथ कुछ कांप रहे थे उसकी पतली कलाइयाँ एक बार ज़ोर से कांप उठीं और रोटियां गोश्त की बोटियों के साथ ज़मीन पर आ गिरीं।

16. **जब वे सफ़ेद रोटियां धरती पर गिरीं, तब सितारे मुस्करा रहे थे, चांद हँस रहा था, सर्द हवाएं पैनी हो गई थीं, सड़क सुनसान थी, होटल बंद हो चुका था और तुम डोरा के साथ शाम के डिनर की तरीफ़ कर रहे थे। खैर ! लेकिन इसके बाद क्या हुआ ? ... कुत्ते ने आगे बढ़कर मालिक को पीछे ढकेल दिया, पशु ने मनुष्य को पीछे ढकेल दिया, पेट ने आगे बढ़कर दिल को पीछे ढकेल दिया।

17. जब रोटियाँ ज़मीन पर गिरीं तो कहीं ठंड से दुबके हुए मोती को भूख की गरमी ने झपटने पर मजबूर कर दिया। प्रेम और स्नेह के खेल खत्म हो गए। और जब तक गनपत आगे बढ़कर उसे रोकता, एक रोटी मोती के पेट में जा चुकी थी और दूसरी का आधा हिस्सा भी ख़त्म हो चुका था।**

18. पल भर में सब कुछ बदल गया। गनपत की अंतड़ियों की आग को तेज़ कर वे रोटियाँ मोती के पेट में चली गई थीं। लेकिन दूसरे ही क्षण अंतड़ियों की आग जैसे गनपत की रग-रग में फैल गई और आँखों से निकलने लगी। गनपत ने पास ही पड़ा हुआ पत्थर मोती के सिर पर दे मारा। कुत्ते की दर्दनाक चीखें उस सर्द रात में गूँज उठीं।

19. मोती बड़ी देर तक रोता रहा और गनपत उसे देखता रहा, जैसे वह खुद भी नहीं समझ पा रहा था कि क्या हो गया। इसके बाद धीरे-धीरे मोती की आवाज़ धीमी होती गई। और एक बार ज़ोर से चीखकर वह सदा के लिए ख़ामोश हो गया। गनपत का बरस-बरस का साथी चला गया। इतनी बड़ी दुनिया में सिर्फ़ एक साथी था, वह भी चला गया।

20. गनपत बड़ी देर तक खड़ा रहा। और जब वह अपने सुख-दुख के साथी की लाश पर झुका तो उसकी आंखों से पानी बह रहा था। उस वक़्त बरफ़ीली हवाओं के झोंके तेज़ हो गए थे, सड़क बिल्कुल सूनी थी और तुम डोरा के साथ लिहाफ़ में लिपटे हुए थे।

1. A quelle(s) personne(s) est écrite cette nouvelle ? Quel en est le personnage principal (métier, âge, apparence) ? Connaissez-vous un roman français écrit à la 2de personne ?
2. Relevez les oppositions dans les paragraphes 2 et 3.
3. Traduire les paragraphes 6-7 de la page 1 (*).
4. Où intervient le narrateur ? Quel est le sens de ces interventions ?
5. Traduire les paragraphes 16-17 page 2 (**).
6. Quel est à votre avis le paragraphe le plus frappant du texte ? (justifiez)
7. Le récit est conduit à plusieurs temps verbaux. Voyez-vous une raison à ces changements (passé simple/présent) ?
8. Relevez les constructions des verbes signifiant obliger, être difficile, obtenir/trouver.
9. Faites la liste des mots inconnus et cherchez-les dans le dictionnaire.
10. Classez (en donnant les sens/fonctions) les emplois de *to* et de *koî*.